is question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

No. of Question Paper : 8844 GC

ique Paper Code : 62051404

me of the Paper : Hindi 'A'

me of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi 'A'**

nester : IV

ration : 3 Hours Maximum Marks : 75

tructions for Candidates

Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

All questions are compulsory.

त्रों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (20)

(क) मधूलिका ने राजा का प्रतिदान, अनुग्रह नहीं लिया। वह दूसरे खेतों में काम करती और चौथे पहर रूखी-सूखी खाकर पड़ी रहती। मधूक वृक्ष के नीचे छोटी-सी पर्ण कुटी थी। सूखे डंठलों से उसकी दीवार बनी थी। मधूलिका का वही आश्रम था। कठोर परिश्रम से जो रूखा अन्न

मिलता, वही उसकी साँसों को बढ़ाने के लिए पर्याप्त था। फिर भी उसके अंग पर तपस्या की कान्ति थी। आस-पास के उसका आदर करते थे। वह एक आदर्श बालिका थी।

अथवा

गनी ने देखा कि पहलवान के होंठ सूख रहे हैं और उसकी के गिर्द दायरे गहरे हो गए हैं। वह उसके कन्धे पर हाथ रखकर 'जो होना था, हो गया रक्खिया! उसे अब कोई लौटा थोड़े ही है! खुदा नेक की नेकी बनाए रखे और बद की बदी माफ करे। आकर तुम लोगों को देख लिया, सो समझूंगा कि चिराग को देख अल्लाह तुम्हें सेहतमन्द रखें।'

(ख) अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसी राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौशल्या के मातृ-में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम तो भीगे, मुकुट न भीगने पाए, इसकी चिंता बनी रही।

अथवा

गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि सबके दुःख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है। यह आत्म-नि

44

बन्धन ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। अहिंसा, सत्य और अक्रोधमूलक धर्म का मूल उत्स यही है। मुझे आश्चर्य होता है कि अनजान में भी हमारी भाषा में यह भाव कैसे रह गया है। लेकिन मुझे नाखून के बढ़ने पर आश्चर्य हुआ था।

कहानी की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

संस्मरण और रेखाचित्र का सामान्य परिचय दीजिए।

'नमक का दरोगा' कहानी यथार्थ से आदर्श की यात्रा है'-मूल्यांकन कीजिए। (12)

अथवा

'मैं हार गई' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबन्ध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'उत्साह' निबंध का सार लिखिए।

5. 'अंधेर-नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'घीसा' का चरित्र मर्मस्पर्शी है-विवेचन कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए।

(क) प्रेमचंदयुगीन उपन्यास;

(ख) भारतेंदुयुगीन नाटक।